

ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 27 अंक: 6 बुलेटिन अवधि: 20-24 जनवरी, 2018 दिन: शुक्रवार दिनांक: 19 जनवरी, 2018

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	20-01-2018	21-01-2018	22-01-2018	23-01-2018	24-01-2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	15
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	19	18	18	16	15
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	6	5	5	4	4
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	85	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	40	45	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	006	004	004	004
वायु की दिशा	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	पश्चिम-उत्तर-पश्चिम	दक्षिण-पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (12 से 18 जनवरी 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कहीं-कहीं घने बादल छाये रहे व 0.0 मिमी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 14.6 से 21.4 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 1.3 से 9.7 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ गेहूँ की फसल में निचली पत्तियों पर पीला रतवा रोग का प्रकोप दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 लीटर/हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ बसंत कालीन गन्ने की बुवाई हतु तैयारी करे।
- ❖ तोरिया की पकी फसल की तुड़ाई करे।
- ❖ दिसम्बर में बोई गई गेहूँ की फसल में 20-25 दिन पर सिंचाई करें तथा नत्रजन की बची हुई 1/3 मात्रा का सिंचाई के बाद प्रयोग करें।

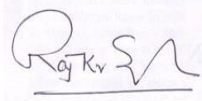
- ❖ दलहनी फसलो में, क्यूजानफॉप पी-मिथाइल (टर्गा सुपर) 5 ई० सी० की 1 ली० मात्रा को 700 ली० पानी में घोल बनाकर बुवाई के 15-20 दिन बाद छिड़काव करें।
- ❖ दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20-25 दिन बाद और दूसरी 35-40 दिन बाद करें।
- ❖ गेहूँ की फसल में चौड़ी पत्ति एवं घास वर्ग के खरपतवार के नियंत्रण हेतु वेस्टा की 400 ग्रा० मात्रा का 700 ली० पानी में घोल बनाकर 1 हेक्टेयर में बुवाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें।
- ❖ गेहूँ की फसल में खरपतवार के नियंत्रण हेतु, टोटल (या सल्फोसल्फोरॉन एवं मेटसल्फ्यूरॉन मिथाईल) की 40 ग्रा० मात्रा को 700 ली० पानी में घोलकर बनाकर 25-30 दिन बाद/हेक्टेयर में छिड़काव करें।
- ❖ शरदकालीन गन्ने की फसल में यदि श्रमिक उपलब्ध हों तो फावड़े से एक गहरी गुड़ाई करने के उपरांत सिंचाई करके अनुमोदित मात्रा की लगभग 40 कि०ग्रा०/है० की दर से एक चौथाई नत्रजन (लगभग 82 कि०ग्रा० यूरिया/है०) का प्रयोग करें।
- ❖ पेड़ी वाले गन्ने की फसल में 60 कि०ग्रा० नत्रजन, 60 कि०ग्रा० फास्फोरस एवं 40 कि०ग्रा० पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से नमी की उपस्थिति में प्रयोग कर अच्छी तरह से मिट्टी में मिला दें तथा खरपतवारों के नियंत्रण के लिए गन्ने की सूखी पत्तियों को गन्ने की दो कतारों के बीच में मोटी परत बिछाने से मृदा में नमी बनी रहती है तथा खरपतवारों का नियंत्रण भी होता है। जिन किसानों को पेड़ी गन्ने की फसल लेनी है उनकी कटाई मध्य फरवरी में ही करें।
- ❖ आवश्यकतानुसार फसलों में निराई गुड़ाई, सिंचाई एवं पोषक तत्वों का प्रबन्धन करें।

उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ पॉलीहाउस के भीतर टमाटर, शिमला मिर्च एवं खीरा की खेती की जानी है, में सफाई कर मिट्टी की खुदाई करें तथा फार्मलीन जैसे रसायन से उपचार करें।
- ❖ यदि पॉली हाउस साफ तथा उपचारित है तो नर्सरी बैड बनाकर उससे टमाटर, शिमला मिर्च एवं बैंगन की पौध तैयार करें ध्यान रहे कि नर्सरी बैड उठी हो तथा बीज की बुवाई उचित दूरी पर करें।
- ❖ मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें।
- ❖ मटर की गुड़ाई के पश्चात् हल्की सिंचाई करें।
- ❖ उंचे क्षेत्रों में आलू की फसल हेतु उन्नतशील किस्मों जैसे कुफरी ज्योति, शैलजा, कुफरी हिमालिनी, कुफरी गिरधारी के बीज की व्यवस्था करें साथ ही साथ आलू वाले खेतों की जुताई कर साफ सुथरा रखें।
- ❖ मटर के निचली पत्तियों के पीले धब्बे दिखाई देने पर, मैकोजेब 2.5 ग्राम प्रति ली० या साइमोकजेनिल 8 प्रतिशत + मैकोजेब 64 प्रतिशत के मिश्रण को 2.5 ग्राम प्रति ली० पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ प्याज और लहसुन की पत्तियाँ उपर से पीली पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल या टेबूकोनाजोल का 1 मिली० प्रति ली० पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ आलू एवं टमाटर की फसल में पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैकोजेब 2.5 ग्रा०/ली० या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा० प्रति ली० पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैकोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ गोभी वर्गीय सब्जियों में पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैकोजेब का 2.5 ग्रा० प्रति ली० पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ सही संस्थाओं से टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च की उन्नत किस्मों का बीज क्रय नर्सरी में बुवाई करें।
- ❖ पाले से बचाव हेतु पौधशाला को सफेद प्लास्टिक से इस तरह ढकें कि सूर्य की रोशनी के साथ-साथ हवा का संचार भी हो सके (जमीन से 1 मीटर उपर)।
- ❖ पूर्व में आरक्षित किये शीतोष्ण फल वृक्षों जैसे सेब, नाशपाती, खुबानी, अखरोट आदि फल वृक्षों को लगाने का कार्य प्रारम्भ करें।
- ❖ शीतोष्ण फल पौधों के थाले बनाये तथा गोबर, नत्रजन एवं फास्फोरस की उचित मात्रा का प्रयोग करें।
- ❖ सेब में कैंकर रोग की रोकथाम के लिए कटाई छटाई के उपरान्त कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.3 प्रतिशत का प्रयोग करें। कटाई छटाई के दौरान रोगी एवं कीट ग्रसित अथवा अवांछनीय शाखाओं को काटकर कीटनाशक तथा फफूँदी नाशक रसायनों का छिड़काव करें।
- ❖ सेब तथा गुठलीदार फलों में तना विगलन रोग की रोकथाम के लिए प्रभावित सेब तथा गुठलीदार फलों के तनों के चारों तरफ मिट्टी हटाएँ जिससे धूप की किरणें ग्रसित भाग पर पड़े। प्रभावित छालों को हटाकर इसमें चौबटिया पेस्ट लगाकर मिट्टी से ढक दें। इसके अलावा 0.3 प्रतिशत कॉपरऑक्सीक्लोराइड की प्रति पौधा से ड्रैचिंग करें।

पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते हैं, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।
- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें।
- ❖ पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख-रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- ❖ पशुओं को टंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि टंडी हवा प्रवेश न करें।
- ❖ टंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक टंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
- ❖ पहाड़ी क्षेत्रों में पशुशाला में गर्मी हेतु हीटर का उपयोग करें। तथा अंगेठी का उपयोग धुआँ निकलने के बाद कर सकते हैं।
- ❖ मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें।
- ❖ पशुओं को धान की कन्नी आहार के रूप में दें। जिससे उन्हें उर्जा और गर्मी मिलती है।



डा० आर० के० सिंह

प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,

गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर